किसानों की प्रतिक्रिया:

- इस उद्यम को भूमिहीन और छोटे किसानों के लिए जीवन रेखा के रूप में देखा जाता है।
- संचालन में आसानी ने इसे कृषक महिलाओं के लिए सुलभ बना दिया है, जिससे भागीदारी बढ़ गई है।
- कृषक महिलाओं और ग्रामीण युवाओं दोनों के लिए रोजगार सृजन एक महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणाम रहा है।
- कृषि-प्रसंस्करण केंद्र ग्रामीण स्तर पर एक व्यवहार्य आय सृजन और आजीविका विकल्प के रूप में उभरे हैं।

निष्कर्ष: ग्राम स्तरीय कृषि-प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना एक सराहनीय पहल है जो किसानों, विशेषकर संसाधन-गरीब और भूमिहीन श्रेणियों के किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करती है। आर्थिक स्थिति, महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन और कृषि पद्धतियों में समग्र सुधार पर सकारात्मक प्रभाव सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में इन केंद्रों के महत्व को रेखांकित करता है। तकनीकी और आर्थिक संकेतकों के संदर्भ में प्राप्त सफलता कृषि-प्रसंस्करण केंद्र मॉडल की व्यवहार्यता और संभावित मापनीयता को और मजबूत करती है। ग्रामीण परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में, ये केंद्र आशा की किरण के रूप में खड़े हैं, कृषक समुदायों के भीतर आत्मनिर्भरता और समृद्धि को बढ़ावा देते हैं।

प्रस्तुतकर्ता :

पी. मूवेन्थन, उत्तम सिंह एवं सुमन सिंह।

प्रकाशक :

डॉ. पी. के. घोष
निदेशक एवं कुलपति
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2277333
वेबसाईट – https://nibsm.icar.gov.in/

Publication No. - NIBSM/EF/2024-75

Farmer FIRST

Farmer FIRST Programme
फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम

(Agricultural Extension Division)
(कृषि प्रसार विभाग)
Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

कृषि प्रसंस्करण केन्द्र
ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सकारात्मक प्रभाव

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2277333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2277333
Website : https://nibsm.icar.gov.in/

परिचय: भारत, जो कि कृषि प्रधान देश है, यहाँ कृषि क्षेत्र में नई तकनीकों और प्रसंस्करण के क्षेत्र में होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों के साथ-साथ, गाँवों को स्वावलंबी बनाने के लिए कई पहलुओं को ध्यान में रखा जा रहा है। इसमें से एक महत्वपूर्ण पहलू है कृषि प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना और उनका संचालन है। कृषि-प्रसंस्करण केंद्र एक परिवर्तनकारी अवधारणा है जिसे ग्रामीण स्तर पर अनाज और मसालों का प्रसंस्करण करके किसानों की आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, दूर दराज के गावों में ज्यादातर किसान अपने कृषि उत्पादों को प्रसंस्करण के लिए आस पास के कस्बो और शहरो में ले जाते है, तथा कई किसान उन उत्पादों को सीधे बिचौलियो को बेच देते है जिससे उनको सही मूल्य नहीं मिल पाता। इन्ही बातो को ध्यान में रख कर फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम के अंतर्गत एक मॉडल कृषि प्रसंस्करण इकाई की स्थापना किया गया है, जहाँ हमने मिनी चावल मिल, पल्वराइज़र, मिनी आटा मिल, पीकेवी दाल मिल, मिनी तेल निकालने वाली मशीन और मसाला पीसने वाली मशीन जैसी मशीनों से सुसज्जित किया है, इन केंद्रों का उद्देश्य किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि करना है। यह इकाई कृषक समूह या महिला स्वसहायता समूह के द्वारा संचालित है। इस इकाई को स्थापित करने के लिए अनुमानित लागत लगभग रु. 5-6 लाख और न्यूनतम स्थान की आवश्यकता होती है, ये कृषि-प्रसंस्करण परिसर तकनीकी रूप से व्यवहार्य, आर्थिक रूप से व्यवहार्य और सामाजिक रूप से स्वीकार्य मॉडल साबित हुए हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन:

कृषि प्रसंस्करण केंद्रों का स्थापना करने से ग्रामीण क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। इन केंद्रों के माध्यम से किसानों को नई तकनीकों का परिचय होता है और उन्हें उन तकनीकों का सही तरीके से उपयोग करना सिखाया जाता है। इससे कृषि उत्पादों की मूल्य निर्धारण में सुधार होता है, जिससे किसानों को अधिक मुनाफा होता है।

1. कृषि प्रसंस्करण केंद्रों के माध्यम से किसानों को उनकी उपज को अच्छे तरीके से प्रसंस्कृत करने के लिए आवश्यक सुविधाएं मिलती हैं। इससे उन्हें बाजार में अच्छी कीमत मिलती है और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। गाँवों में कृषि प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना से स्थानीय स्तर पर रोजगार का एक नया स्रोत भी बनता है।
2. कृषि प्रसंस्करण केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी जानकारी का स्रोत बनता है और इससे किसानों की जागरूकता में भी वृद्धि होती है। नई तकनीकों का सही तरीके से उपयोग करने के लिए किसानों को प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है, जिससे उनकी कौशल में भी सुधार होता है।
3. इसके अलावा, कृषि प्रसंस्करण केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न उद्यमों का स्थापना होता है, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार का एक और स्रोत मिलता है और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।
4. कृषि प्रसंस्करण केंद्रों का सकारात्मक प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है, किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करता है और गाँवों में नई रोजगार सृष्टि करता है। इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक समृद्धि की दिशा में कदम बढ़ा जा रहा है और कृषि से जुड़े लोगों को नई संभावनाओं का एक नया सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण मिल रहा है।

ग्रामीण स्तर पर कृषि-प्रसंस्करण केंद्रों की स्थापना से महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणाम मिले हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. आर्थिक लाभ: कृषि-प्रसंस्करण इकाई के स्थापना से बारह किसान परिवारों को सीधे लाभ हुआ है, जिससे प्रति माह 10 से 12 हजार रुपये की आय होती है। इससे न केवल व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति में सुधार होता है बल्कि समुदाय के समग्र आर्थिक विकास में भी योगदान मिलता है।
2. महिला सशक्तिकरण: महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का एक स्रोत बन गया है, जो उन्हें कौशल विकास और कृषि-प्रसंस्करण गतिविधियों में भागीदारी के अवसर प्रदान करता है। यह न केवल उनकी भूमिकाओं में विविधता लाता है बल्कि समुदाय में महिलाओं के समग्र सामाजिक-आर्थिक उत्थान में भी योगदान देता है।
3. फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान में कमी: ग्रामीण स्तर पर खेत के समीप कृषि-प्रसंस्करण केंद्रों की निकटता से फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान में काफी कमी आई है। यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त हों, जो कृषि पद्धतियों के समग्र सुधार में योगदान दे।
4. रोजगार सृजन: कृषि-प्रसंस्करण इकाई की स्थापना ने ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं, मौसमी प्रवासन को कम किया है और समुदाय के भीतर स्थायी आजीविका को बढ़ावा दिया है।
5. कृषि में विविधीकरण: कृषि-प्रसंस्करण केंद्र कृषि में विविधीकरण को बढ़ावा देने, किसानों को वैकल्पिक फसलों और उत्पादों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर निर्भरता कम होती है।

कृषि-प्रसंस्करण इकाई के लिए उपयोगी मशीनें:

कृषि-प्रसंस्करण इकाई में विभिन्न प्रकार के उपयोगी मशीनों को स्थापित किया गया है, इसमें से ज्यादातर मशीन छोटे आकर के है जिनका संचालन एवं प्रबंधन आसानी से किये जा सकें, इन मशीनों को चलाने के लिए एक तथा तीन फेज बिजली कनेक्शन की आवश्यकता होती है।

1. मिनी चावल मिल (Mini Rice Mill):

कार्य: मिनी चावल मिल किसानों को अपनी धान की प्रक्रिया को सरल बनाने में मदद करता है। यह धान को चावल में परिणामीत करने के लिए अलग करने और साफ करने बहुत उपयोगी है।

2. पल्वराइज़र (Pulveriser):

कार्य: पल्वराइज़र विभिन्न अनाजों और धानियों को पीसने के लिए उपयोग होता है। यह किसानों को उनकी उपज को चूर्ण या धूला बनाने में सहायक होता है, जिससे उसे बाजार में बेचने के लिए तैयार किया जा सकता है। इसका उपयोग मुर्गी एवं अन्य पशु दाना बनाने के लिए किया जाता है।

3. मिनी आटा मिल (Mini Flour Mill):

कार्य: मिनी आटा मिल अनाजों को आटा में पिसने में सहायक होता है। इससे किसान अपनी उपज को स्वयं आटा बनाने के लिए तैयार कर सकता है, जिससे वह अधिक मूल्य मिल सकता है।

4. पीकेवी दाल मिल (PKV Dal Mill):

कार्य: पीकेवी दाल मिल चना, तिवड़ा, अरहर एवं अन्य दलहनों को दाल बनाने उपयोगी है। यह किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली दाल प्राप्त करने में मदद करता है, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य मिल सकता है।

5. मिनी तेल निकालने वाली मशीन (Mini Oil Expeller Machine):

कार्य: यह मशीन तेल निकालने की प्रक्रिया को सरल बनाती है। किसान अपनी खाद्य उपज से तेल निकाल सकता है और इसे बाजार में बेचने के लिए उपयोग कर सकता है।

6. मसाला पीसने वाली मशीन (Spice Grinding Machine):

कार्य: इस मशीन का उपयोग मसालों को पीसने और प्रसंस्कृत करने के लिए किया जाता है। किसान अपनी खुद की उपज से मसाले बना सकता है, जिससे उसे अधिक मूल्य मिल सकता है।